

सालासर बाला जी की आरती
जयतजिय जय बजरंग बाला, कृपा कर सालासर वाला ॥
चैत सुदी पूनम को जन्मे, अंजनी पवन खुशी मन में ।
प्रकट भए सुर वानर तन में, वदिति यश वकिरम त्रभिवन में ।
दूध पीवत सतन मात के, नजर गई नभ ओर ।
तब जननी की गोद से पहुंच, उदयाचल पर भोर ।
अरुण फल लखि रवि मुख डाला ॥
कृपा कर सालासर वाला
तमिरि भूमण्डल में छाई, चबुक पर इंदर वजर बाए ।
तभी से हनुमत कहलाए, दवय हनुमान नाम पाए ।
उस अवसर में रुक गयो, पवन सर्व उन्चास ।
इधर हो गयो अंधकार, उत रुक्यो वशिव को श्वास ।
भए ब्रह्मादिकि बेहाला । ।
कृपा कर सालासर वाला
देव सब आए तुम्हारे आगे, सकल मलि वनिय करन लागे ।
पवन कू भी लाए सांगे, क्रोध सब पवन तना भागे ।
सभी देवता वर दयौ, अरज करी कर जोड़ ।
सुनके सबकी अरज गरज, लखि दयिा रविको छोड़ ।
हो गया जग में उजयियाला ॥
कृपा कर सालासर वाला
रहे सुग्रीव पास जाई, आ गए वन में रघुराई ।
हरी रावण सीतामाई, वकिल फरिते दोनों भाई ।
वपिर रूप धराराम को, कहा आप सब हाल ।
कपिपति से करवाई मतिरता, मार दयिा कपिबाल ।
दुःख सुग्रीव तना टाला ॥
कृपा कर सालासर वाला
आज्जा ले रघुपतिकी धाया, लंक में सधु लांघ आया ।
हाल सीता का लख पाया, मुदरकिा दे वनफल खाया ।
वन वधिवंस दशकंध सुत, वध कर लंक जलाय ।
चूडामणि संदेश सयिा का, दयिा राम को आय ।
हुए खुश त्रभिवन भूपाला ॥
कृपा कर सालासर वाला
जोड़ी कपिदिल रघुवर चाला, कटक हति सधु बांध डाला ।
युद्ध रच दीन्हा वकिराला, कयिौ राक्षसकुल पैमाला ।
लक्ष्मण को शक्तिलिगी, लायौ गरिी उठाय ।
देइ संजीवन लखन जयिाए, रघुबर हर्ष सवाय ।
गरब सब रावन का गाला ॥
कृपा कर सालासर वाला
रची अहरिवन ने माया, सोवते राम लखन लाया ।
बने वहां देवी की काया, करने को अपना चति चाया ।
अहरिवन रावन हत्यौ, फेर हाथ को हाथ ।
मंत्र वभीषण पाय आप को, हो गयो लंका नाथ ।
खुल गया करमा का ताला ॥
कृपा कर सालासर वाला
अयोध्या राम राज्य कीना, आपको दास बना दीना ।
अतुल बल घृत

चरिजीव परभु ने कथियो, जग में दयियो पुजाय ।
जो कोई नशिचय कर के ध्यावे, ताकी करो सहाय ।
कष्ट सब भक्तन का टाला ॥
कृपा कर सालासर वाला
भक्तजन चरण कमल सेवे, जात आत सालासर देवे ।
ध्वजा नारयिल भोग देवे, मनोरथ सदिध कर लेवे ।
कारज सारो भक्त के, सदा करो कल्याण ।
वपिर नवासी लक्ष्मणगढ़ के, बालकृष्ण धर ध्यान ।
नाम की जपे सदा माला ॥
कृपा कर सालासर वाला